ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 866-869
www.allresearchjournal.com
Received: 26-06-2016
Accepted: 22-08-2016

गुंजन कुमारी
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
गुंजन कुमारी
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

बच्चों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की भूमिका

गुंजन कुमारी

सारांश
बच्चे किसी भी देश के भविष्य होते हैं और इस भविष्य का निर्माण करने वाला अध्यापक होता है। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा शिक्षक ही देता है। छात्रों को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से गढ़ने में उसका योगदान एक शिल्पकार की तरह होता है। एक अध्यापक ही बच्चों को अपनी ज्ञान रुपी गंगा में स्नान करा कर अच्छा नागरिक बनाने की दिशा में प्रयास करता है। शिक्षक ही बालकों की योग्यता, क्षमता, रूचि, अभिरूचि आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है। वह छात्रों को ज्ञान व क्रिया का अधिगम कराने के लिए उचित वातावरण की तैयारी करता है। ताकि छात्र भविष्य में सफलता प्राप्त कर सके।

मुख्य–शब्दः व्यक्त्वि विकास, शिक्षक, योग्यता एवं क्षमता

प्रस्तावनाः
प्राचीन काल से आज तक शिक्षक को समाज के आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्वीकारा जाता है। प्रारम्भ में वह ब्रह्मा–विष्णु तो कालान्तर में धर्मगुरु बन गया। यह तो निश्चित ही है कि बालक के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की अद्वितीय भूमिका है। मनोविज्ञान के प्रभाव ने शिक्षा को बाल केन्द्रित बना दिया है। ऐसे में आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक, शिक्षक होने के साथ–साथ अभिभावक, नेता, निर्देशक, सहयोगी, सलाहकार तथा निष्पक्ष निर्णायक आदि अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करता है। आज शिक्षक अनेक प्रकार से बालकों का सहयोग करता है। भौतिक युग की कृत्रिमता, यांत्रिकता ने भारतीय परिवेश को परिवर्तित एवं परिवर्तनशील बना दिया है। समय के साथ–साथ नए–नए प्रयोगों और दृष्टिकोणों ने हर व्यवसाय एवं पद के स्वरुप को बदल दिया है। अब कोई भी कार्य अपने प्राचीन तौर–तरीकों से करना असंभव सा हो गया है। जब ऐसा परिवर्तन समाज में आता है, तब समाज के शिक्षित, सुशिक्षित वर्ग का दायित्व और भी बढ़ जाता है। दायित्वों का भार उसे अधिक संयमित होकर निभाना पड़ता है। यह बात शिक्षक वर्ग पर अधिक लागू होती है। समाज का निर्माता, राष्ट्र का मार्गदर्शक, स्वस्थ परंपराओं के नियामक शिक्षक को और भी अधिक सावधान होने की जरूरत पड़ती है।
प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' रहा अर्थात् विद्या वही है, जो मुक्ति दिलाए। आज शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या नियुक्तये' हो गया है अर्थात् विद्या वही जो नियुक्ति दिलाए। इस दृष्टि से शिक्षा के बदलते अर्थ ने समाज की मानसिकता को बदल दिया है। यही कारण है कि आज समाज में लोग केवल शिक्षित होना चाहते हैं, सुशिक्षित नहीं बनना चाहते। वे चाहते हैं कि ज्ञान का सीधा संबंध उनके अर्थोपार्जन से ही हो। जिस ज्ञान से अधिक से अधिक धन और उच्च पद को ग्रहण किया जाए वही शिक्षा कारगर है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि आज अभिभावकों की सोच अपने बच्चों के प्रति अधिक संवेदनशील बनती चली जा रही है। वे स्वयं बच्चों को चाँद–तारे, सुख–सुविधाओं से भरकर कर्तव्य विमूढ़ बनाते जा रहे हैं। इससे बच्चों में समाज में संघर्ष करने की भावना खत्म होती जा रही है। वे कठिनाइयों का सामना करना नहीं चाहते। हरदम अभिभावक उनकी सहायता, मदद के लिए तैयार रहते हैं, उन्हें स्वयं कुछ नहीं करने देना चाहते। ऐसे में शिक्षक को विद्यार्थियों को उचित ढंग से प्रशिक्षित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।
शिक्षक का कर्तव्य छात्रों को केवल शिक्षित करना ही नहीं है, अपितु उन्हें संस्कारी भी बनाना है। उनके अंदर केवल शब्द ज्ञान ही नहीं भरना है बल्कि उसे नैतिकता, कर्तव्य परायणता, सजगता का पाठ पढ़ाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यदि अध्यापक यह कार्य नहीं करता तो वह सच्चे अर्थों में अध्यापक कहलाने योग्य ही नहीं है। अध्यापक का कार्य केवल पाठ पढ़ाना ही नहीं होता है, अपितु पाठ को पढ़कर या पढ़ाकर उसमें आयी उद्देश्यात्मकता, नैतिकता आदि को समझाना–सिखाना भी उसी का कर्तव्य होता है। पाठ को पढ़कर समझने की सार्थकता तभी है जब उस ज्ञान को व्यवहार में भी लेकर आया जाए।

बच्चे अपने प्रथम गुरु अर्थात् अभिभावकों से ही सच बोलना सीखते हैं। जब वे छोटी–छोटी बात पर माता–पिता को झूठ बोलते देखते हैं तो स्वतः ही वे झूठ बोलने लग जाते हैं। गांधी जी ने सत्य के प्रयोग पुस्तक में सही बताया है कि जो कार्य हम स्वयं करते हैं, उस कार्य को बच्चों को करने से मना कैसे कर सकते हैं। क्या बच्चों पर उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा ? गाँधी जी शिक्षक के चरित्र और उसके द्वारा शिक्षार्थियों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते थे। गाँधी जी का मानना था कि आत्मा की कसरत शिक्षक के आचरण द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। अतएव युवक हाजिर हों चाहे न हों, शिक्षक को सावधान रहना चाहिए। लंका में बैठा हुआ शिक्षक भी अपने आचरण द्वारा अपने शिष्यों की आत्मा को हिला सकता है। यदि शिक्षक स्वयं झूठ बोले और और अपने शिष्यों को सच्चा बनाने का प्रयत्न करे, तो वह व्यर्थ ही होगा। डरपोक शिक्षक शिष्यों को वीरता नहीं सिखा सकता। व्याभिचारी शिक्षक शिष्यों को सयंम किस प्रकार सिखाएगा ? शिक्षक को स्वयं के लिए नहीं बल्कि अपने शिष्यों के लिए अच्छा बनना और रहना चाहिए। हमारे वैदिक कालीन शिक्षक आचरण कि पवित्रता को लेकर अत्यंत सजग थे। वे पवित्र शब्दों के वास्तविक संरक्षणकर्ता, सामाजिक नीतिशास्त्र एवं धर्मशास्त्र के व्याख्याता और ऐसे उत्सर्ग करने वाले अध्यापक थे जो छात्रों की आंतरिक क्षमताओं को सुदृढ़ कर देते थे। आज भी वैदिक अध्यापकों की तरह ऐसे क्षमतावान अध्यापक पैदा किये जा सकते हैं जो कक्षा में पूरी तैयारी के साथ जाते हों, संप्रत्ययों का सही स्पष्टीकरण अच्छी व्याख्या के साथ करते हों और उन्हें हम प्रभावशाली शिक्षक के रूप में जानें।

शिक्षक का कर्तव्य बन जाता है कि अपने बच्चों को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित न रखे। पुस्तकीय ज्ञान तो मात्र परीक्षा उत्तीर्ण करने का साधन होता है। अंकों को पाने का एक उपक्रम होता है। लेकिन विभिन्न चीजों से जोड़कर हम उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। उन्हें अच्छा नागरिक और समाज दर्शक बनाकर समाज की छोटी से छोटी चीज से जोड़ा जाय और उन्हें हर उस बात, घटना, विचार, भावना को समझाएं जिससे उन्हें अपने परिवेश, समाज से जुड़ने और समझने में मदद मिले। शैक्षिक एवं प्रबंधकीय कार्यों में आज दायित्व बोध का आभाव है। नयी शिक्षा नीति विद्यालयों एवं महाविद्यालयों को शैक्षिक संस्थाओं में अधिक से अधिक स्वायत्तता देने की वकालत करती है और पूरी शिक्षण प्रक्रिया में दायित्वबोध की बात करती है। यदि हम अच्छे अध्यापक पा सकते हैं तो निश्चित ही उनमे दायित्वबोध की भावना होगी और राष्ट्र के भविष्य की शिक्षा कभी भी धूमिल नहीं होगी। आज शिक्षकों के दायित्वों की चर्चा इसलिए बनी हुई है कि इसने विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता का अर्थ अनियंत्रित स्वतंत्रता लगाया है, जबकि स्वायत्तता से तात्पर्य नियंत्रित स्वतंत्रता होनी चाहिए। अध्यापकों को शिक्षण विधि एवं पाठ्य पुस्तकों के चयन एवं विचारों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तो मिलनी ही चाहिए जिससे वे उन्मुक्त और स्वतंत्र वातावरण में शिक्षण एवं शोध कार्यों को प्रोत्साहन दे सकें। इसके साथ ही शिक्षकों के कार्यों का मूल्यांकन भी समय–समय पर विश्वविद्यालयी अधिकारियों, समाज तथा शिक्षार्थियों द्वारा किया जाना चाहिए। इससे शिक्षक के अपने व्यवसाय के प्रति मूल्यांकन द्वारा दायित्व की भावना का पता लगेगा।

देश के सर्वांगीण एवं बहुमुखी विकास के लिए शिक्षा की परम आवष्यकता है और अच्छी शिक्षा के लिए योग्य शिक्षकों की, योग्य शिक्षकों के लिए उच्चकोटि की शिक्षा व्यवस्था की जरूरत है जो किसी उत्तम कोटि के शिक्षा संस्थान में ही सम्भव है। उत्तम कोटि के अध्यापक के द्वारा ही देश की भावी पीढ़ी (बालक) के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। सभी शिक्षक जन्मजात कुशल नहीं होते, अतः शिक्षण कला में दक्षता एवं पूर्णता हेतु आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक मानवतावादी दृष्टिकोण वाला है। वह पुनर्रचनावाद, धर्मनिरपेक्षता एवं समाजवाद को अपना रहा है। वह आज बालक का मार्गदर्शक है। सार्त्र ने निर्विद्यालयीकरण की सिफारिश की। इस विद्वान ने 'विद्यालय मृतप्राय है,' की संकल्पना देकर विद्यालय के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगा दिया। इनके अनुसार शिक्षा अनौपचारिक और गैर अनौपचारिक होनी चाहिए। बालक जब सीखना चाहे, जैसे सीखना चाहे, यह उसका अधिकार है। अतः यह अवसर उसे मिलना चाहिए। इसलिए आज औपचारिक शिक्षा के स्थान पर खुली शिक्षा के रूप को भी समर्थन मिला है। अतः आज के शिक्षक सब कालों के शिक्षकों से भिन्न दिखाई देते है। वे विद्यार्थी से दूर रहकर भी शिक्षा देने लगे हैं। एक अच्छे अध्यापक का व्यवहार आज के संदर्भ में मित्रवत् होना चाहिए। मित्रवत् व्यवहार होने पर छात्र अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को खुलकर प्रकट कर सकते हैं। अध्यापकों से भय का भाव उन्हें अपने से दूर करता चला जाता है। वे कद और भार में तो शारीरिक रूप से बढ़ते रहते हैं। लेकिन मानसिक रूप से उनका विकास नहीं होता हैं। इससे शिक्षक द्वारा दिया गया ज्ञान व्यर्थ ही जाता है। प्रायः शिक्षक भी डाँट–फटकार कर समझाने का प्रयास करता है। जिससे डर के कारण बच्चों का विद्यालय जाने का मन नहीं करता है। वे विद्यालय जाने से कतराने लगते हैं। घर से विद्यालय जाने की बजाय कहीं और ही घूमने–फिरने तथा समय काटने पहुँचते हैं। ऐसे हालात में बच्चों का मन कैसे पढ़ाई में लगेगा। पढ़ाई बोझ लगने लगेगी, विद्यालय से दूरी बढ़ने लगेगी। दूरी का भाव खिन्नता, कुंठा और तनाव को फैलाता है। बच्चे उग्रता में आकर अमानवीय व्यवहार करने लग जाते हैं। यही कारण है कि आज हम समाज में विद्यार्थियों द्वारा अपने ही साथियों को मारने, लूटने से लेकर जघन्य कार्यों में लीन देखते हैं। वे अपने साथियों से ही अमानवीय व्यवहार करते हुए संकोच नहीं करते हैं। यौन शोषण, हिंसा का वातावरण फैलाने लगते हैं। शिक्षक का मित्रवत् व्यवहार छात्रों के मन में आई भटकाव को दूर करता है, उन्हें भ्रमित होने से बचाता है। जीवन संजीवनी का कार्य करने वाले अध्यापकों का प्रभाव निश्चित रूप से गुमराह छात्रों की दशा और दिशा बदलने में कारगर सिद्ध होता है। शिक्षण व्यवसाय निःसंदेह एक आदर्श व्यवसाय है। इसलिए शिक्षक के उत्तरदायित्व, उसकी भूमिकाएं तथा उसके कार्य अधिक जिम्मेदारीपूर्ण हैं। आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक के स्वरूप की संकल्पना करें तो लगता है शिक्षक वर्तमान प्रचलित शिक्षण पद्धतियों तथा कार्य प्रणाली के साथ परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप अपने को बना रहा है। वह शिक्षक होने के नाते एक अच्छा मार्गदर्शक बनता है। वह शिक्षण में नई एवं सामयिक विधियों, नव प्रौद्योगिकी तथा यांत्रिकी उपकरणों का प्रयोग करता है। वह प्रवेश प्रक्रिया, शिक्षा, मूल्यांकन तथा अभ्यास आदि में नव तकनीकों का प्रयोग भी करता है। शिक्षक बालकों का मित्र तथा सहयोगी होने के कारण मार्गदर्शक के रूप में भूमिका अदा करता है। साथ ही विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास तथा राष्ट्रीय एकता के विकास में भी भूमिका निभाता है। अतः प्राचीन समय की तुलना में आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक बालकों के अधिक नजदीक है।

किन्तु एक शिक्षक को इस नजदीकी के दायरे भी बरकरार रखना चाहिए। कभी–कभी आवश्यकता से अधिक नजदीकी भी घातक साबित होती है। आज–कल शिक्षा व्यवस्था के प्रतिमान गिरते जा रहे हैं। शिक्षा जगत् में प्रायः जब छात्र अपने अध्यापकों को ही परस्पर लड़ते, झगड़ते निंदा करते देखते हैं, तो उनका यह व्यवहार छात्रों को दुर्व्यवहार ही सिखाता है। वे भी परस्पर ऐसा व्यवहार करने लग जाते हैं। आपसी मन–मुटाव का प्रभाव छात्रों की शिक्षा पर भी पड़ता है। निश्चित रूप से छात्रों का परीक्षा परिणाम तो प्रभावित होता ही है साथ ही उनकी मानसिकता पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। शिक्षक के चरित्र का सबसे अधिक प्रभाव छात्रों पर पड़ता है।

शिक्षक नेता है जो विद्यार्थियों का नेतृत्व करता है, विद्यार्थियों को सही दिशा–निर्देश देता है। समाज और समय की मांग के अनुसार विद्यालय में अनेकानेक क्रियाओं को आयोजित करता है। विद्यार्थियों की विचार शक्ति को उत्प्रेरित करता है। अनेक प्रकार के मार्गों का उल्लेख करता है और बालक को सही रास्ता चयन करने में सहायता करता है। बालक को समझता है। उसकी योग्यताओं, क्षमताओं का पता लगाना, उसकी रुचियों व अभिरुचियों को जानना, उसके व्यक्तित्व को पहचानना, उसके गुणों और कमियों को जानना और उनके आधार पर उसकी अध्ययन योग्यताओं का अनुमान करके सही दिशा–निर्देश देना, शिक्षक का आधारभूत काम है। शिक्षक के व्यावसायिक कार्य से सम्बन्धित जिस परिणाम की आशा है वह परिणाम प्राप्त करने का प्रयत्न करना शिक्षक का आधारभूत काम है। जाति, धर्म, लिंग अथवा अन्य किसी भेदभाव के बिना बालक के व्यक्तित्व को निखारना शिक्षक का दायित्व है। शिक्षक समुदाय और समाज का एक सदस्य है। इसलिए समाज के मानकों के अनुरूप बालक के व्यक्तित्व का निर्माण करना शिक्षक का काम है तथा शिक्षक का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और आधारभूत काम बालक के नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर ध्यान देना है। शिक्षक अपने विषय का ज्ञाता होता है। उसे उस ज्ञान को विद्यार्थियों तक पहुँचाने की कला में दक्ष होना चाहिए। उसकी योग्यता, कार्य करने की क्षमता, शिक्षण कला, विधियों की जानकारी, कौशलों की जानकारी तथा कम से कम प्रयत्न में सरलता से ज्ञान को सम्प्रेषित करना यह सब शिक्षक की विशेषज्ञ भूमिका मानी जानी चाहिए। आज केवल विषय ज्ञान पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों को समझना, विषय की प्रकृति को समझना, समाज की वर्तमान और भावी आवश्यकताओं को समझना और उसके अनुरूप बालक में अनुकूल शैक्षिक वातावरण व प्रौद्योगिकी एवं यांत्रिकी उपकरणों के प्रयोग द्वारा ज्ञान का विकास करना विशेषज्ञ की भूमिका कहलायेगी। यद्यपि विशेषज्ञ एवं व्यावसायिक भूमिका को पृथक नहीं किया जा सकता, फिर भी अपने उद्देश्य (बालक) को कैसे अच्छे से अच्छा ज्ञान दिया जा सकता है, यह सब विशेषज्ञ भूमिका के अन्तर्गत आता है। शिक्षक भी कई प्रकार के होते हैं, जैसे– विषय शिक्षक, कला शिक्षक, संगीत शिक्षक, नृत्य शिक्षक, स्वास्थ्य शिक्षक आदि। इन सबके लिए भी विशेषता जरुरी है। कार्य निर्धारण क्षेत्र के साथ शिक्षक को अपने विषय के लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है। अपने विद्यार्थियों और साथियों की दृष्टि को ध्यान में रखना होता है। कक्षा में सामाजिक तथा समरूप वातावरण का निर्माण करना होता है तथा समाज की मांग के अनुरूप उस विषय में किन संदर्भों पर अधिक बल दिया जाए इसको भी उसे ध्यान रखना होता है। एक वाक्य में कहें तो प्रत्येक अध्यापक अपने विषय का विशेषज्ञ हो। विषय को बालक तक सम्प्रेषित करने के लिए जिन योग्यताओं की आवश्यकता है वे सब शिक्षक की विशेषज्ञ के रूप में भूमिकाएं मानी जाती हैं। शिक्षण व्यवसाय अन्य व्यवसायों की तरह न होकर जिम्मेदारी की भूमिका वाला व्यवसाय है। जहाँ तक शिक्षक का प्रश्न है, वह अपने विषय को पढ़ाने वाला एक वैसा ही सदस्य है जैसे दूसरे व्यवसायों के लोग जिम्मेदार होते हैं। कैलिफोर्निया शिक्षक संघ के अनुसार आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक का प्रमुख व्यावसायिक उत्तरदायित्व अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को या बालकों के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करने वाली भूमिका में निहित है। इसलिए आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक विषय शिक्षण करे, लेकिन विद्यार्थियों को पर्याप्त स्वतंत्रता दे। अनुशासन पालन करवाना उसकी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है जो उसके व्यवसाय के साथ जुड़ी है, किन्तु इसके साथ व्यावसायिक संहिता यह भी कहती है कि शिक्षक को स्वयं भी अनुशासित होना चाहिए। निर्धारित समय में शिक्षण करना, विद्यालय में सौंपे गये कार्यों को पूरा करना, विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए सहगामी क्रियाओं के आयोजन की दक्षता तथा बालक के संकलित अभिलेख पत्रों का रख–रखाव अध्यापक की व्यावसायिक भूमिका के अन्तर्गत आते हैं। यहां तक कि समाज में धर्म के आधार पर यदि कोई वैमनस्य पैदा होता है अथवा अन्धविश्वास के कारण समाज में गलत परम्पराएं विकसित हो जाएं तो उनको नियंत्रित एवं संशोधित करने में भी शिक्षक की व्यावसायिक भूमिका की आवश्यकता होगी। शिक्षक विभिन्न स्रोतों से नवीनतम एवं सही–सही सूचनाएं एकत्रित करता है और उन सूचनाओं से विद्यार्थी को अवगत कराता है। विद्यार्थियों के बीच होने वाले झगड़ों, विवादों को सुलझाता है। निर्णय करने में वह एक न्यायाधीश की भूमिका का निर्वाह करता है। इसी प्रकार मूल्यांकन करते समय भी वह न्यायाधीश की भूमिका का निर्वहण करता है। शिक्षक विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में भूमिका का निर्वाह करता है। जिस प्रकार समाज का नेता समाज के सदस्यों की भावनाओं को समझता है, उनकी इज्जत करता है, उसी प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों का मार्गदर्शक है। वह उनकी भावनाओं को समझता है ओर उनके योग्य नीतियों का निर्धारण करता है। विद्यार्थियों के मध्य उत्पन्न हुए असंतोष अथवा झगड़ों के लिए वह दो पक्षों की बात को संतुलित करते हुए निर्णायक की भूमिका निभाता है। वह बालकों के लिए एक अभिभावक की भूमिका निभाता है, क्योंकि अभिभावकों ने उतने समय के लिए अपने बालक को अध्यापक के हाथों में सौप दिया होता है। अध्यापक तीन प्रकार के समूह का नेता हो सकता है– (1) विद्यार्थियों का, (2) शिक्षक साथियों का (3) समाज/समुदाय का नेतृत्व करने वाला। अनके विद्यार्थियों में स्वयं की पहचान स्थापित करने की इच्छा रहती है। शिक्षक ऐसे विद्यार्थियों की पहचान करता है। यदि गलत संदर्भ में उसका अहम् विकसित हुआ हो तो उसे ठीक करना और मार्गदर्शन देना शिक्षक का काम है। जो अच्छे विद्यार्थी हैं, उनकी उपलब्धि की प्रशंसा करना और अच्छे काम करने को प्रेरित करना आदि अप्रत्यक्ष रूप से बालक के अहम् की संतुष्टि हैं। शिक्षक एक अच्छा मित्र, सहायक एवं विश्वास करने योग्य होता है। अनेक बार देखा गया है कि विद्यार्थी अपने घर के सदस्यों से अपनी कोई बात नहीं कह पाता और शिक्षक पर वह विश्वास करता है। अतः शिक्षक को उसके विश्वास की रक्षा करनी चाहिए। शिक्षक की आधुनिक शिक्षा पद्धति में अनके भूमिकाएं ऐसी हैं जो अलिखित हैं। जैसे– दुर्बल व असहाय वर्ग को आगे बढ़ाना, वजीफा देना और सुविधाएं जुटाने आदि की भूमिका। कभी–कभी नियमों से हटकर भी काम करना होता है, क्योंकि पूरी तरह नियम पालन किया जाए तो हो सकता है जिस बालक को लाभ मिलना चाहिए उसे ना मिले। यहाँ उसे सामाजिक न्यायकर्ता की भूमिका निभानी पड़ती है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की एक भूमिका मूल्यों के विकास की भी है। पूरा देश, बल्कि विश्व मूल्य ह्रास से चिन्तित है। इस संदर्भ में शिक्षक की भूमिका अद्वितीय है। आज सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, पारम्परिक, समाजवादी, प्रजातन्त्रात्मक, वैज्ञानिक और आधुनिक मूल्यों के संदर्भ में सोचना तथा शिक्षा द्वारा उन मूल्यों के विकास पर जारे देना शिक्षक की भूमिका से जुड़ गया है।

शिक्षकों का अहम ध्येय युवा मस्तिष्क को तेजस्वी बनाना है। तेजस्वी युवा धरती पर, धरती के नीचे और ऊपर आसमान में सबसे सशक्त संसाधन हैं। शिक्षक की भूमिका उस सीढ़ी जैसी है, जिसके जरिये लोग जीवन की ऊंचाइयों को छूते हैं। हमारे समाज में और एक बच्चे के जीवन में, एक शिक्षक का स्थान माता–पिता के बाद, लेकिन ईश्वर से पहले आता है। माता–पिता, गुरु और फिर ईश्वर। ऐसी महत्ता, दुनिया में किसी और पेशे की नहीं है कि वह समाज के लिए शिक्षक से बढ़कर महत्वपूर्ण हो। शिक्षक, खासकर विद्यालयी शिक्षक के सामने व्यक्ति के जीवन को संवारने की भारी जिम्मेदारी होती है। बचपन ही वह आधारशिला है जिस पर जीवन की इमारत खड़ी होती है। जैसा बीज बचपन में बोया जाता है वैसा ही जीवन के वृक्ष में फल लगता है। इसलिए बचपन में दी जाने वाली शिक्षा महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण होती

है। शिक्षक का ध्येय बच्चों का चरित्र निर्माण करना तथा ऐसे मूल्यों को रोपना होना चाहिए जिससे कि उनके सीखने की क्षमता में वृद्धि हो। वे उनमें वह आत्मविश्वास पैदा करें कि छात्र कल्पनाशील और सृजनशील बन सके। इस रूप में छात्रों विकास ही उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करते हुए प्रतिस्पर्द्धा में उतारेगा। सामान्य प्रक्रिया में शिक्षक कुछेक सर्वोत्तम परिणाम देने वाले छात्रों की ओर आकर्षित होते हैं तथा और अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते रहते हैं। इसके विपरीत एक शिक्षक की अहम भूमिका यह है कि वह उन विद्यार्थियों की ओर ध्यान केन्द्रित करे जो पढ़ने में कमजोर हैं तथा उनमें बेहतर समझदारी एवं सीखने की प्रवृति विकसित करने का प्रयास करे। ऐसा शिक्षक ही वास्तविक गुरु होता है। महान शिक्षक एवं भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण्न शिक्षकों को सलाह देते थे कि–'हमें सतत् बौद्धिक निष्ठा एवं सार्वभौम करुणा की खोज में रहना चाहिए। ये दोनों गुण सच्चे शिक्षक की पहचान हैं।

निष्कर्ष:

एक शिक्षक में अपने पेशे के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए। शिक्षक को जीवन भर अध्ययन करते रहना चाहिए। उसे शिक्षण और बच्चों से प्रेम होना चाहिए। उसे न सिर्फ विषय की सैद्धान्तिक बातें पढ़नी चाहिए बल्कि छात्रों में हमारी महान सभ्यता की विरासत और सामाजिक मूल्यों की जमीन भी तैयार करनी चाहिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षक छात्रों का ऐसा विकास करे कि वे बिना किसी शिक्षक की सहायता लिए स्वयं सीखने में सक्षम हो सकें। ज्ञान प्राप्ति के लिए चिंतन एवं कल्पना की स्वतंत्रता आवश्यक है और इसके लिए शिक्षक को उपयुक्त माहौल का निर्माण करना चाहिए। शिक्षक रोल माडल होता है। वह न सिर्फ हमें ज्ञान देता है बल्कि हमारे जीवन को संवारते समय महान सपने और उद्देश्य प्रदान करता है। दूसरी बात यह कि शिक्षा एवं ज्ञानार्जन की पूरी प्रक्रिया का परिणाम यह होना चाहिए कि व्यक्ति में पेशेवर क्षमता का विकास हो और उसमें इस आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति का उदय हो कि दृ ढ़तापूर्वक सारी बाधाओं को पार कर एक रूप रेखा का विकास कर सके और इस कार्य में शिक्षक सहायता करता है। एक शिक्षक का जीवन कई दीपों को प्रज्ज्वलित करता है। आशावादी और मूल्याधारित शिक्षण में विश्वास करने वाले प्राथमिक, माध्यमिक और कॉलेज शिक्षा के शिक्षक शिक्षार्थियों को कई दशक आगे के लिए तैयार कर देते हैं। इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करता है। शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में राष्ट्र निर्माण की क्षमताएं पैदा करना है। ये क्षमताएं शिक्षण संस्थाओं के ध्येय से प्राप्त होती हैं तथा शिक्षकों के अनुभव से सुदृढ़ होती हैं ताकि शिक्षण संस्थाओं से निकलने के बाद छात्रों में नेतृत्वकारी विशिष्टता आ जाए। अगर समाज में योग्य, चरित्रवान एवं निष्ठावान छात्र हो जाएं तो वर्तमान समाज को प्रत्येक वर्ष एक सुखद अहसास दिया जा सकता है और यह कार्य शिक्षक, जो गुरु हैं, प्रेरणास्रोत हैं, वही कर सकते हैं। अंततः शिक्षा का उद्देश्य है सत्य की खोज। इस खोज का केन्द्र अध्यापक होता है जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से जीवन में व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है। छात्रों को जो भी कठिनाई होती है ,जो भी जिज्ञासा होती है, जो वे जानना चाहते हैं, उन सब के लिए वे अध्यापक पर ही निर्भर करते हैं। उनके लिए उनका अध्यापक एक तरह से ज्ञान का भंडार (एन्साइक्लोपीडिया) है जिसके पास सभी प्रश्नों के उत्तर हैं। यदि शिक्षक के मार्गदर्शन में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थ में ग्रहण कर मानवीय गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रसार करता है तो मौजूदा इक्कीसवीं सदी में दुनिया काफी सुन्दर हो जाएगी।

संदर्भ

1. गाँधी,एम. के., सत्य के प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1909, पृ. 310.
2. मित्रा,एस., ट्रेंड्स ऐंड थॉट्स इन एजुकेशन, शोध प्रपत्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, वॉल्यूम 7, 1988, पृ. 1–12.
3. मिश्रा,के. एस., ट्रेंड्स ऐंड थॉट्स इन एजुकेशन, शोध प्रपत्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, वॉल्यूम 7, 1988, पृ. 13–17.
4. शर्मा,डी. आर., ट्रेंड्स ऐंड थॉट्स इन एजुकेशन, शोध प्रपत्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, वॉल्यूम 7, 1988, पृ. 17–22.
5. कुमार,कक्कड़ एवं बोस, ट्रेंड्स ऐंड थॉट्स इन एजुकेशन, शोध प्रपत्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, वॉल्यूम 7, 1988, पृ. 73–77.
6. अथर्ववेद, 11/3/5.
7. कठोपनिषद्, शान्तिपाठ.
8. तैत्तिरीयोपनिषद्, 1/1.
9. तैत्तिरीयोपनिषद्, 1/2/3.